

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 15, सिस्टेमेटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य पाठ, उपासना, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 15 है, सिस्टेमेटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य ग्रंथ, आराधना, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम ।

हम मसीह के सिद्धांत, क्राइस्टोलॉजी पर अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

हम अभी भी उनके ईश्वरत्व पर काम कर रहे हैं, और हम मसीह के ईश्वरत्व के पाँच ऐतिहासिक प्रमाणों में से पाँचवें पर हैं। हमने कहा है कि वह ईश्वर के स्वभाव का है। धर्मग्रंथ उसे ईश्वरीय उपाधियाँ, ईश्वरीय गुण और ऐसे कार्य प्रदान करते हैं जो केवल ईश्वर ही कर सकता है।

पाँच में से पाँचवाँ प्रमाण यह है कि यीशु को परमेश्वर की आराधना प्राप्त होती है। बाइबिल की कहानी के संदर्भ में संदर्भ यह है कि अच्छे लोग आराधना से इनकार करते हैं। हम इसे प्रेरितों के काम 14 में देखते हैं, दूसरे मिशनरी, पहले मिशनरी यात्रा में पॉल और बरनबास के साथ, क्षमा करें, और लुस्त्रा में, प्रेरितों के काम 14:8। अब लुस्त्रा में, एक आदमी बैठा था जो अपने पैरों का इस्तेमाल नहीं कर सकता था।

वह जन्म से ही अपाहिज था और कभी चल नहीं पाया था। उसने पौलुस की बातें सुनीं। और पौलुस ने उस पर ध्यान से देखा और यह देखकर कि उसे चंगा हो जाने का विश्वास है, ऊँची आवाज़ में कहा, अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो।

और वह उछलकर चलने लगा। जब भीड़ ने देखा कि पौलुस ने क्या किया है, तो उन्होंने अपनी आवाज़ उठाई, लुकोनी भाषा में कहा कि थोड़ी पृष्ठभूमि की ज़रूरत है। पौलुस इन लोगों से बात कर सकता था और वे और इसके विपरीत क्योंकि उनके पास समान या कोइन ग्रीक भाषा थी।

ठीक है। लेकिन मेरा अनुभव यह रहा है कि जब लोग आराधना करते हैं, तो वे अपनी मूल भाषा में इसका उपयोग करते हैं। और लिस्ट्रांस के लिए, वह लाइकोनियन थी, और पॉल और बरनबास उस भाषा को नहीं जानते थे।

तो, इस चमत्कार से चकित भीड़ ने लाइकोनियन में कहा, देवता मनुष्यों की शक्ल में हमारे पास उतरे हैं। बरनबास को वे ज़ीउस कहते थे। वह पॉल से बड़ा है।

मैं उसे एक सुंदर, बड़ी, मर्दाना दाढ़ी के साथ देख सकता हूँ। और पॉल हेमीज़, हेमीज़ या दूसरे देवताओं में मर्करी, संदेशवाहक भगवान है। पॉल बड़ा उपदेशक है क्योंकि वह मुख्य वक्ता था।

लूका वास्तव में यह कहता है। और ज़ीउस का पुजारी, जिसका मंदिर शहर के प्रवेश द्वार पर था, बैलों और मालाओं को फाटकों पर लाया और भीड़ के साथ बलिदान चढ़ाना चाहता था। पॉल और बरनबास लाइकोनियन नहीं समझते थे, लेकिन उन्होंने पुजारिन से शरीर की भाषा समझी, जो उनके लिए बलिदान करने के लिए तैयार थी।

अब पॉल के सामने एक समस्या है। जब वह तरसुस सेमिनरी गया और अपने मिशन कोर्स में गया, तो उसने बहुत कुछ सीखा, लेकिन उसने कभी यह कोर्स नहीं किया कि अगर आपको पूजा सेवा में आमंत्रित किया जाता है और आप ईश्वर हैं तो आपको क्या करना चाहिए। खैर, उन्हें पता था कि क्या करना है।

यहूदी मसीही, अर्थात् प्रेरित बरनबास और पौलुस ने जब यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े और भीड़ में घुसकर कहा, हे लोगों, तुम यह क्यों कर रहे हो? हम भी तुम्हारे समान स्वभाव के लोग हैं। और हम तुम्हें यह शुभ समाचार देते हैं कि तुम इन व्यर्थ बातों से फिरकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है, सब को बनाया है।

पिछले समयों में उसने सभी जातियों को अपने-अपने मार्गों पर चलने दिया। फिर भी उसने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा, क्योंकि उसने तुम्हारे लिए आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर भलाई की, और तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया। इन बातों के बावजूद भी वे लोगों को उनके लिए बलिदान चढ़ाने से नहीं रोकते।

मैं इस खूबसूरत कहानी से यही निष्कर्ष निकालना चाहता हूँ, जिसमें बहुत सी अच्छी बातें हैं, जिसमें ईश्वर का सामान्य रहस्योद्घाटन शामिल है, इस मामले में, और बारिश और फलदार फसलें और सब्जियाँ और फल देना, जिससे खाने की मेज़ पर बैठे लोगों को खुशी मिले। लेकिन हमारा मुद्दा यह नहीं है। हमारा मुद्दा यह है कि पौलुस और बरनबास ने उनके प्रति ईश्वर की आराधना को अस्वीकार कर दिया।

यह बेतुका है। रहस्योद्घाटन की पुस्तक में दो बार, उस रहस्योद्घाटन के प्राप्तकर्ता जॉन, दर्शन से अभिभूत हो जाता है। इसमें बहुत तीव्रता है।

इसका बहुत बड़ा महत्व है। यह अविश्वसनीय है। और 19:10 में, इस बीच में, स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, 19:9, यह लिखो धन्य हैं वे लोग जो मेमने के विवाह भोज में आमंत्रित हैं।

और उसने मुझसे कहा, ये परमेश्वर के सच्चे वचन हैं। तब मैं उसकी पूजा करने के लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा। लेकिन उसने मुझसे कहा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

मैं आपके और आपके भाइयों के साथ एक साथी सेवक हूँ जो यीशु की गवाही को मानते हैं। यीशु की गवाही के लिए परमेश्वर की आराधना करो, जो भविष्यवाणी की आत्मा है। अच्छे लोग आराधना करने से इनकार करते हैं।

अच्छे इंसान। अच्छे स्वर्गदूत भी यही करते हैं। प्रकाशितवाक्य के आखिरी अध्याय में, जॉन फिर से आता है।

देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ, यीशु अध्याय 22 की सातवीं आयत में कहते हैं। धन्य है वह जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को मानता है। मुझे नहीं पता कि हमें यह प्रतिक्रिया किसी आनंद के तुरंत बाद क्यों मिलती है, लेकिन यह सच है।

मैं, यूहन्ना, वही हूँ जिसने ये बातें सुनी और देखीं। और जब मैंने इन्हें सुना और देखा, तो मैं उस स्वर्गदूत के चरणों में गिरकर दण्डवत करने लगा जिसने मुझे ये बातें दिखाई थीं। लेकिन उसने मुझसे कहा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

मैं तुम्हारे और तुम्हारे भाई भविष्यद्वक्ताओं के साथ, इस पुस्तक के वचनों को मानने वालों के साथ एक सह-सेवक हूँ। परमेश्वर की आराधना करो। यह प्रकाशितवाक्य 22:8 और 9 होना चाहिए।

बाइबल के विश्वास के इस संदर्भ में, अच्छे मनुष्य आराधना से इनकार करते हैं, जैसा कि लुस्त्रा में पौलुस और बरनबास के उदाहरण में देखा जा सकता है। अच्छे स्वर्गदूत आराधना से इनकार करते हैं, जैसा कि हमने प्रकाशितवाक्य 19 और 22 में देखा। हालाँकि, मसीह को आराधना मिलती है।

स्वर्गदूतों ने उसकी आराधना की। हाँ, फिर से इब्रानियों 1 पर वापस आते हैं। इब्रानियों 1 में परमेश्वर के पुत्र के ईश्वरत्व के सभी पाँच ऐतिहासिक प्रमाण एक ही अध्याय में हैं।

यह भरी हुई है। इब्रानियों 1:6, और फिर, जब वह ज्येष्ठ को दुनिया में लाता है, तो वह कहता है, परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। मैंने पहले कहा था कि जब यह कहा जाता है कि ज्येष्ठ को दुनिया में लाता है, जब परमेश्वर ज्येष्ठ को दुनिया में लाता है, तो मैं सोचता था कि यह मनुष्यों की दुनिया है।

यह बेथलेहम का संदर्भ था। और वहाँ कुछ स्वर्गदूतीय बातें हो रही थीं। सर्वोच्च और पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा, मनुष्यों के लिए शांति, सद्भावना, इत्यादि।

मैं कहना चाहूँगा कि उन लोगों को शांति मिले जिनसे परमेश्वर प्रसन्न है। लेकिन यह सही नहीं है क्योंकि इब्रानियों 1 की दुनिया बेथलेहम में यीशु के जन्म के समय की धरती नहीं है। यह स्वर्गीय दुनिया है।

स्वर्गीय दुनिया स्वर्ग में चढ़ रही है और उच्च स्थान पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ रही है, श्लोक 3। जब यीशु स्वर्गरोहित होकर पिता के पास वापस लौटा और पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा, तो पिता ने पुत्र के स्वर्गदूतों से कहा, परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। मसीह को आराधना प्राप्त होती है।

यह परमेश्वर की इच्छा का हिस्सा है। यूहन्ना 9:38, यीशु के सामने खुद को दंडवत करने वाले ज्यादातर लोग ईसाई उपासना में शामिल नहीं होते। वे हताश लोग हैं; वे अपने बच्चे से प्यार करते

हैं जो भयानक संकट में हैं या अपने नौकर से जो उसी स्थिति में हैं, और हताशा में, वे उसके पैरों पर गिरते हैं, विनती करते हैं, कृपया, उसे ठीक कर दें।

अगर तुम कर सको तो मेरी बेटी की मदद करो, मेरे नौकर की मदद करो। यह आराधना नहीं है। लेकिन यूहन्ना 9 में, हमारे पास ईसाई आराधना के समान कुछ है।

ओह, मेरी बात। यहूदी नेता अंततः उससे तंग आ गए, उन्हें सिखाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

यूहन्ना 9:34, अंत में। श्लोक 35, यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है। और जब वह उससे मिला, तो उसने पूछा, क्या तू मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है? और उसने उत्तर दिया, मुझे यह उत्तर बहुत पसंद है।

यह आदमी यीशु के हाथों में मिट्टी की तरह है। मेरा मतलब है, यह अविश्वसनीय है। वह कहता है, वह कौन है, सर, कि मैं उस पर विश्वास करूँ? यीशु जो भी कहते हैं वह इस आदमी के लिए काफी है।

यीशु ने उससे कहा, "तुमने उसे देखा है।" यह बहुत अच्छी बात है। तुमने उसे देखा है।

अन्धा देखता है, और वही तुझ से बातें कर रहा है। उसने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ। और उस ने उसे दण्डवत् किया।

मैं इसे, और यह असामान्य है, पूजा के एक कार्य के रूप में लेता हूँ। यीशु ने कहा, न्याय के लिए, मैं दुनिया में आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देख सकें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ। यह उनके अपारदर्शी आध्यात्मिक कथनों में से एक है।

उनका मतलब है कि जो लोग यीशु के प्रकाश में, दुनिया की रोशनी जो उन पर चमक रही है, अपनी आध्यात्मिक अंधता को देखते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। उन्हें, वह आध्यात्मिक दृष्टि देता है, और उन्हें क्षमा करता है। जो लोग यीशु के प्रकाश को अस्वीकार करते हुए देखने का दावा करते हैं, दुनिया की रोशनी जो शब्दों और कर्मों में उन पर आती है, उन्हें वह अंधा कर देता है।

यह तथ्य कि यह सही व्याख्या है, निम्नलिखित शब्दों से पुष्टि होती है। उसके पास के कुछ फरीसी ये बातें सुनकर कहने लगे, क्या हम भी अंधे हैं? ओह, इनका अर्थ अलग है। क्या हम आध्यात्मिक रूप से हीन हैं? यीशु ने अंधे का अर्थ यह लगाया कि क्या हम वास्तव में आपके प्रकाश में, आपके प्रकाशन में अपने आध्यात्मिक अंधेपन, गरीबी और ज़रूरत की गहराई को देखते हैं? यीशु ने कहा, यदि आप अंधे हैं, तो उनके शब्द के अर्थ में, यदि आपने अपना आध्यात्मिक अंधापन देखा, तो आपको कोई दोष नहीं होगा।

लेकिन अब तुम कहते हो, हम देखते हैं, तुम्हारा अपराध अभी भी बना हुआ है। अगर तुम मेरे पिता द्वारा मेरे माध्यम से दिए गए रहस्योद्घाटन के विपरीत, परमेश्वर की इच्छा जानने का दावा करते हो, तो तुम खो गए हो। तुम अभी भी अपने पापों में हो।

तुम्हारा अपराध बना हुआ है। अंधे आदमी ने यीशु की पूजा की। मैं यह बात जल्दी से नहीं कहता।

मेरा मतलब है, जल्दबाजी में लिया गया निष्कर्ष। मुझे लगता है कि यह बोलना है। यह जॉन का तरीका है।

हे भगवान। अध्याय दो का अंत। यूहन्ना कहता है कि यीशु को मनुष्य के बारे में बताने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि मनुष्य के अंदर क्या है।

अध्याय तीन। अब, फरीसियों में से एक आदमी था, निकुदेमुस, वह एक नमूना है। वह एक नमूना है।

मुझे थोड़ा और पीछे जाना चाहिए। यीशु ने गलील के काना में पर्व के समय कई चमत्कार किए। और बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

लेकिन फिर एक चौंकाने वाला बयान अब है जब वह फसह की दावत पर यरूशलेम में था, बहुत से लोगों ने उसके नाम पर विश्वास किया जब उन्होंने उसके द्वारा किए जा रहे चिन्हों को देखा। यूहन्ना 2:23. लेकिन यीशु ने अपने आप को उनके हाथों में नहीं सौंपा।

एक मिनट रुकिए। लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, लेकिन वह उनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता नहीं जताता। यह सही है।

क्या हो रहा है? यह जॉन के सुसमाचार में इन आधा दर्जन अवसरों का पहला संकेत है, जिसमें विश्वास की कमी की धारणा है जो विश्वास की कमी की बात करती है। हम जानते हैं कि जो कुछ आगे हुआ उसके कारण यीशु और उसके हिस्से ने खुद को उनके भरोसे नहीं छोड़ा क्योंकि वह सभी लोगों को जानता था और उसे अपने बारे में गवाही देने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह खुद जानता था कि एक आदमी में क्या है। जाहिर है, वे उसे केवल एक चमत्कार करने वाले के रूप में मानते थे।

और वह उनके साथ कोई वाचा नहीं बाँधेगा। वह खुद को उनके प्रति प्रतिबद्ध नहीं करेगा क्योंकि वह जानता था कि उनका विश्वास अपर्याप्त है। वह जानता था कि यह मनुष्य में है।

अब, अध्याय तीन में एक आदमी था, फरीसी। हमारे पास निकोदेमुस है, जिसके पास हर सुविधा है। वह एक पुरुष है।

वह वाचा के लोगों, इस्राएल का सदस्य है। वह महासभा का सदस्य है। वह एक फरीसी है, इस यहूदी समूह का हिस्सा है जो उपवास, प्रार्थना और कानून की अपेक्षा से भी अधिक देने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता है और जो लोगों की नज़र में सम्मानित थे।

इससे भी बढ़कर, यीशु संकेत देते हैं कि वे इस्राएल में एक विशेष शिक्षक थे। और इसलिए अध्याय तीन निश्चित रूप से उसे यीशु के पास उसकी पूरी महिमा में आते हुए दिखाता है, है न? नहीं, यह उसे आध्यात्मिक किंडरगार्टन में दिखाता है और यीशु उसे बताता है कि वह कुछ भी नहीं जानता, किसी बुरे तरीके से नहीं, बल्कि यीशु जानता था कि उसे क्या चाहिए और उसने उसे उसकी जगह पर रखा। और फिर, बेशक, अध्याय सात में, मेरा मानना है, अंत के करीब, निकोडेमस फिर से स्थिति पर आता है।

हाँ, यह सही है। और वह अन्य यहूदी नेताओं के सामने यीशु का बचाव करता है। अध्याय 19 में यह उल्लेखनीय है, मैं इसे मसीह के सामने उसके कबूलनामे के रूप में लेता हूँ, जिसे वह पूरी तरह से समझ भी नहीं पाया था, लेकिन वह अपने लिए दुख माँगता है।

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर के लिए अरिमथिया के यूसुफ के साथ। यह उल्लेखनीय है। इसलिए, यीशु जानता है कि एक आदमी में क्या है, जिसमें निकोडेमस भी शामिल है।

वह जानता है कि एक औरत में क्या है, वह भी सामरी औरत। यार, उसके खाते में हर डेबिट है। वह एक महिला है।

वह एक सामरी है। और जहाँ तक सामरी महिलाओं की बात है, वह एक बहुत अच्छा नैतिक उदाहरण नहीं है। आपके पाँच पति रहे हैं, और जिस आदमी के साथ आप अभी हैं, वह आपके पति में है।

ओह, मेरी बात। लेकिन भगवान की कृपा से, वह एक महिला प्रचारक बन जाती है जो उस आदमी से कहती है, आओ उस आदमी से मिलो जिसने मुझे वो सब कुछ बताया जो मैंने किया था। और वे शहर से बाहर निकल आते हैं।

यह देखना वाकई अच्छा है। वे उसे कुछ समय के लिए अपने साथ रहने के लिए कहते हैं। और फिर वे कहते हैं, अब हम विश्वास करते हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि तुमने क्या कहा।

परमेश्वर ने उन्हें यीशु से जोड़ने के लिए उसका इस्तेमाल किया। लेकिन अब हमने उसके लिए खुद से सुना। हमने उसे खुद के लिए सुना।

और अब हम जानते हैं और मानते हैं कि वह दुनिया का उद्धारकर्ता है। यह सिर्फ परमेश्वर का तरीका है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना अच्छे सामरी की कहानी को नहीं दोहराता, बल्कि वह इसे इस तरह की भाषा में दिखाता है, यह दिखाते हुए कि एक सामरी महिला परमेश्वर की आशीष है।

और सामरी लोग स्वीकार करते हैं कि यीशु दुनिया के उद्धारकर्ता हैं, जबकि अधिकांश यहूदियों को इस बारे में कुछ भी पता नहीं है। वे उनसे नफरत करते हैं। वे उनका विरोध करते हैं।

लेकिन जॉन 9 में, यहाँ विचार के खतरे पर वापस लौटते हुए, एक पूर्व अंधा व्यक्ति जो बहुत कम जानता है, न हेलेन केसर, न ब्रेल, न ही कोई गाइड डॉग, लेकिन वह जानता है कि यीशु ने उसके लिए क्या किया। और यीशु उसे खुद यीशु पर विश्वास करने के लिए संकेत देते हैं। और वह विश्वास करता है।

और वह उसकी आराधना करता है। और यीशु उसकी दोषपूर्ण आराधना के लिए उसे सुधारता नहीं है। इसके बजाय वह उसे आशीर्वाद देता है।

जैसा कि हमने अध्याय 20 में पहले कहा था, थॉमस एक यहूदी साथी की ओर देखता है और उससे कहता है, हे मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर। और यीशु ने न केवल थॉमस को बल्कि उन लोगों को भी धन्य घोषित किया जो बिना देखे विश्वास करते हैं। बेशक, वह समझता था कि थॉमस के संदेह करने और फिर देखने और फिर स्वीकार करने से उन्हें लाभ होगा।

वह मानो एक यहूदी की आराधना करता है, जो न केवल यहूदी है, बल्कि ईश्वर-मनुष्य भी है। जैसा कि हमने पहले भी कम से कम एक बार देखा है, फिलिप्पियों 2:10 और 11 में, अपमान की स्थिति के बाद, पौलुस ने उत्कर्ष की स्थिति की यह प्रसिद्ध प्रस्तुति दी है। इसलिए, यह एक महत्वपूर्ण यूनानी संयोजन है।

इसलिए, ऐसा इसलिए है क्योंकि बेटे ने परमेश्वर के साथ समानता को नहीं माना, जिसे हासिल करने के लिए आगे बढ़ा जाए और दावा किया जाए, बल्कि उसने खुद को दीन किया और परमेश्वर के स्वरूप के बजाय एक दास का रूप धारण किया और पिता का आज्ञाकारी बन गया, यहाँ तक कि मृत्यु तक। इसलिए, परमेश्वर ने उसे बहुत ऊँचा किया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर, स्वर्ग और पृथ्वी और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुक जाए और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रभु है। जब हम अपने पाठ्यक्रम के अंत में दो अवस्थाओं पर चर्चा करेंगे, तो हम इस अंश को विस्तार से करेंगे।

लेकिन अभी के लिए, यशायाह 45 पृष्ठभूमि है। यह सचमुच हर घुटने और हर जीभ है, लेकिन यह है कि वे सभी पूजा में नहीं आ रहे हैं। कुछ लोग आ रहे हैं, यशायाह कहते हैं, और उससे शर्मिंदा हैं क्योंकि वे उससे नफरत करते हैं।

फिर भी, वे झुकते हैं। इसलिए तकनीकी रूप से, फिलिप्पियों 2:10 और 11 के अनुसार, अंतिम समय में झुकना, सभी आराधना नहीं है। छुड़ाए गए लोगों की ओर से झुकना, आराधना है।

अन्य लोगों, खोए हुए लोगों की ओर से, यह पूजा नहीं है। यह उस व्यक्ति को स्वीकार करने की बाध्यता है जो वास्तव में सभी महिमा और सम्मान के योग्य है और सभी के प्रति समर्पण करना चाहिए, वह समर्पण जो वह सभी से योग्य है। केवल प्रभु में, मेरे बारे में यह कहा जाएगा, यशायाह 45, 24 में यहोवा कहते हैं, केवल प्रभु में ही धार्मिकता और शक्ति है।

उसके पास आकर उन सभी को लज्जित होना पड़ेगा जो उसके विरुद्ध क्रोधित हैं। प्रभु में, इस्राएल की सभी संतानें, नए नियम के दृष्टिकोण से, जिसमें आध्यात्मिक इस्राएल, चर्च भी शामिल है, न्यायोचित ठहराई जाएँगी और महिमा दिखाएँगी। इसलिए सभी की ओर से तकनीकी रूप से पूजा नहीं, बल्कि सभी की ओर से आदर, उसके प्रभुत्व की स्वीकृति।

क्या वे भटके हुए लोग और पंथवादी जो मसीह के ईश्वरत्व को नकारने में उलझे हुए हैं, अब घुटने टेककर स्वीकार करेंगे, कि वे उस आदिम ईसाई स्वीकारोक्ति को स्वीकार करेंगे कि यीशु प्रभु हैं और उन पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करेंगे। मसीह के ईश्वरत्व के बारे में हमारे अध्ययन को पूरा करते हुए दो और मुद्दे हैं। एक है एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम , दूसरा है केनोटिसिज्म ।

मैं उन्हें शिक्षाशास्त्र के कारणों से उसी क्रम में लेने जा रहा हूँ। शैक्षणिक कारणों से, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम , यह एक लैटिन अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है बाहर अतिरिक्त या बिना कैल्विनिस्टिक । कैल्विनिस्टिकम लैटिन है, लैटिन विशेषण कैल्विनिस्टिक ।

इसलिए, एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम कैल्विनिस्टिक एक्स्ट्रा है , कैल्विनिस्टिक बाहर या बिना। यह मूल रूप से एक लूथरन शाप शब्द था, सुधारवादियों के खिलाफ एक लूथरन धब्बा या गाली। वास्तव में, केनोसिस सिद्धांत और एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम दोनों ही लूथरन सुधार बहस में उत्पन्न हुए।

दोनों ही सुधारवादी ईसाई हैं। दोनों ही सुसमाचार को जानते थे और उससे प्यार करते थे। कैल्विन का लूथर पर बहुत बड़ा ऋण था।

अपने समकालीनों को इस तरह से स्वीकार करना प्रथागत नहीं था। इसलिए, वह धर्मशास्त्र के लिए ऑगस्टीन की प्रशंसा करते हैं। वह व्याख्या के लिए अन्य प्रारंभिक पिताओं की प्रशंसा करते हैं।

जॉन क्रिसोस्टॉम विशेष रूप से , और वह लूथर को कुछ श्रेय देता है लेकिन उतना नहीं जितना वह हकदार था क्योंकि लूथर ने कैल्विन को बहुत प्रभावित किया था। फिर भी, उनके उत्तराधिकारियों ने, जब उन्होंने लूथरन कैल्विन की धार्मिक प्रणालियों को और विकसित किया, तो एक-दूसरे के साथ लड़ाई की। यह वास्तव में एक दुखद बात है।

एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम, सुधार के बाद के कैल्विनवादी रूढ़िवाद की लूथरन आलोचना है। यह प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद का वह दौर है जिसमें कहा गया था कि यीशु सुधारवादियों के लिए पूरी तरह से अवतरित नहीं हुए थे। यह उचित नहीं है।

यह गलत है। फिर भी मैं इसे समझ सकता हूँ क्योंकि आज लोग इस तरह से प्रतिक्रिया कर सकते हैं। यह क्या हो रहा है? पहले से ही चर्च के पिता, उदाहरण के लिए, अथानासियस ने इस सिद्धांत को सिखाया है।

इसलिए ई. डेविड विलिस, रोमन कैथोलिक विद्वान जिन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय में पढ़ाया था। पता नहीं। यह कुछ समय पहले की बात है।

मुझे यह भी नहीं पता कि वह जीवित है या नहीं या अब क्या कर रहा है, लेकिन ई. डेविड विलिस। एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम। कैल्विन का कैथोलिक धर्मशास्त्र।

शीर्षक कुछ ऐसा ही था। विलिस का तर्क है कि वास्तव में एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम प्रारंभिक चर्च में कुछ लोगों की शिक्षा थी। उदाहरण के लिए, एथनासियस ने स्पष्ट रूप से इसकी शिक्षा दी थी।

इसलिए, विलिस का तर्क है कि इसे एक्स्ट्रा पैट्रिस्टिकम, पैट्रिस्टिक बाहर या बिना या एक्स्ट्रा कैथोलिकम, कैथोलिक अतिरिक्त या बिना कहा जाना चाहिए। यह शिक्षा क्या है? शिक्षा यह है कि त्रिदेवों का दूसरा व्यक्ति, यह क्राइस्टोलॉजी निश्चित रूप से ऊपर से शुरू होती है। शब्द, प्रकाश, त्रिदेवों का दूसरा व्यक्ति, ईश्वर पुत्र नासरत के यीशु में पूरी तरह से अवतरित हुआ।

लेकिन अगर आप त्रित्ववाद के संदर्भ में थोड़ा और गहराई से सोचें, तो क्या इसका मतलब यह है कि त्रित्व द्वित्व बन गया? क्या ईश्वरत्व का व्यक्ति अब ईश्वरत्व में नहीं रह सकता? यह बेतुका है। मैं इसके लिए कुछ बाइबिल संबंधी औचित्य देने जा रहा हूँ, लेकिन अभी मैं इसे समझाने की कोशिश कर रहा हूँ। तो एक्स्ट्रा कैथोलिकम, एक्स्ट्रा पैट्रिस्टिकम, एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम का मानना है कि हाँ, दूसरा व्यक्ति यीशु में पूरी तरह से अवतरित हुआ।

लेकिन चूँकि वे त्रिदेवों में दूसरे स्थान पर हैं, इसलिए वे अवतार से पूरी तरह बाहर भी रहे। वे अवतार के बिना भी रहे। पूरी तरह से अवतरित, पूरी तरह से बाहर।

यदि आप इसे अस्वीकार करते हैं, तो या तो आप त्रिदेवों को नष्ट कर देंगे या फिर किसी प्रकार के केनोसिस सिद्धांत के साथ समाप्त हो जाएंगे जो अवतार पुत्र की पूर्ण ईश्वरीयता को कम कर देता है। दोनों में से कोई भी स्वीकार्य नहीं है। पूर्ण रूप से अवतार, पूर्ण रूप से बाहर।

मैं ऐसा कुछ कहाँ है? वैसे, ये शब्द या शिक्षाएँ बाइबल में हैं, लेकिन यहाँ एक सवाल है। हमने देखा कि कुलुस्सियों 1 और इब्रानियों 1 दोनों ने पुष्टि की है कि देहधारी पुत्र ने ईश्वरीय कार्य किया। या शाश्वत पुत्र ने किया।

सवाल यह है कि क्या देहधारी पुत्र ने ईश्वरीय कार्य करना बंद कर दिया? अगर ऐसा है, तो मुझे ऐसा नहीं लगता कि वह ईश्वर है। या अगर वह ईश्वरीय कार्य करता रहा, तो क्या उसने शरीर में रहकर ऐसा किया? निश्चित रूप से, देहधारी पुत्र हर जगह मौजूद था। वह सर्वव्यापी या सर्वव्यापी था।

क्या उसने इसे त्याग दिया? कि वह ईश्वर से भी कम है। लेकिन अगर उसने इसे बरकरार रखा, तो निश्चित रूप से उसने इसे शरीर में नहीं रखा। उसका शरीर स्थानीयकृत था।

उदाहरण के लिए, यह गलील या यहूदिया में एक समय में एक स्थान पर था। कुलुस्सियों 1, वह सभी चीजों से पहले है, पद 17। वह शाश्वत है, और उसमें सभी चीजें एक साथ रहती हैं।

चाहे यह पूर्व-अवतार पुत्र का कथन हो या अवतार पुत्र का कथन, यह हमें बता रहा है कि उसने प्रोविडेंस का कार्य किया या अभी भी कर रहा है। मुझे लगता है कि यह बाद वाला है। निश्चित रूप से, चाहे बाइबल इसे स्पष्ट रूप से कहे या नहीं, इसमें प्रोविडेंस ईश्वर का कार्य है, इसमें ईश्वर एक में तीन हैं, तो त्रिदेव प्रोविडेंस का कार्य करते हैं।

त्रिदेव के सिद्धांत की एक शाखा यह है कि त्रिदेव के कार्य तीनों व्यक्तियों के कार्य हैं। ओह, मैं व्यवस्थित धार्मिक भेदों के साथ आता हूँ। जबकि हम ऐसा कहते हैं, ईश्वरत्व की एकता पर जोर देते हुए, उसी समय हम व्यक्तियों के बीच भेद को स्वीकार करते हैं।

हम उन्हें भ्रमित नहीं करते। हम पिता या पवित्र आत्मा को क्रूस पर नहीं रखते। तो, फिर भी, वह क्रूस जहाँ केवल पुत्र मरा, वह भी त्रिदेव का कार्य है।

पवित्र शास्त्र में खुद ही यह कहा गया है। 2 कुरिन्थियों 5, आयत 19 के आस-पास, परमेश्वर मसीह में था, और संसार को अपने साथ मिला रहा था। इस संदर्भ में, पिता।

और इब्रानियों, एक आयत जो मैं अक्सर भूल जाता हूँ, इब्रानियों में मसीह की बात की गई है, प्रकाशितवाक्य की नहीं, रॉबर्ट, लेकिन इब्रानियों में, मसीह के बारे में शाश्वत आत्मा के माध्यम से बात की गई है, जो खुद को परमेश्वर को अर्पित करता है। समझ गया। इब्रानियों 9:14.

मुझे इसे अपने हाथ पर गुदवाना चाहिए। मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा, खुद को बिना किसी दोष के परमेश्वर को अर्पित किया, हमारे विवेक को कितना अधिक शुद्ध करेगा? यदि पुराने नियम के बलिदानों ने शुद्धि प्रदान की, तो मसीह की बलिदानपूर्ण मृत्यु हमारे विवेक को मृत कर्मों से कितना अधिक शुद्ध करेगी ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा कर सकें? और यह पवित्रशास्त्र में एकमात्र स्थान के रूप में योग्य है जो पवित्र आत्मा को मसीह की मृत्यु, मसीह के प्रायश्चित के साथ जोड़ता है। मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा, खुद को बिना किसी दोष के परमेश्वर को अर्पित किया।

केवल मसीह ही देहधारी हुए। केवल मसीह ही मरे। लेकिन परमेश्वर मसीह में था, और संसार को अपने साथ मिला रहा था।

2 कुरिन्थियों 5:19. मैंने भी यही सही कहा था। और मसीह ने खुद को परमेश्वर को अर्पित कर दिया, इब्रानियों 9, 14, अनन्त आत्मा के द्वारा।

इसका क्या मतलब है? त्रिदेव के कार्य साझा हैं। त्रिदेव का कोई भी व्यक्ति अन्य सदस्यों के बिना कार्य नहीं कर सकता। यह सच है, त्रिदेव की एकता पर जोर देते हुए, लेकिन हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते, हम उन्हें अलग करते हैं।

इसलिए केवल पुत्र ही क्रूस पर मरा, लेकिन फिर भी, जब उसने ऐसा किया, तो परमेश्वर ने उसमें कार्य किया, और मसीह ने शाश्वत आत्मा के माध्यम से खुद को अर्पित किया। इसी तरह, ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों ने पुराने नियम में प्रोविडेंस का कार्य किया। सवाल यह है कि क्या देहधारी पुत्र

ने प्रोविडेंस का अपना कार्य करना बंद कर दिया? यदि आप कहते हैं कि उसने किया, तो क्या वह वास्तव में ईश्वर है? खैर, कुछ विहित धर्मशास्त्रियों ने कहा, ठीक है, उसने उन 33 वर्षों के लिए इसे बंद कर दिया, फिर उसने अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में इसे फिर से शुरू किया।

बेटा, मुझे लगता है कि यह वाकई समस्याजनक है। केवल भगवान ही हमें बचा सकते हैं। वह ईश्वरीय कार्यों को नहीं छोड़ते।

और जब कुलुस्सियों 1 हमें बताता है कि मसीह, कि मसीह में, 1:17, सभी चीजें एक साथ रहती हैं, या इब्रानियों 1:3 कहता है, वह अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीजों को बनाए रखता है, जो कि, दोनों ही अवतार पुत्र को प्रोविडेंस के कार्य का श्रेय देते हैं। अब, अवतार पुत्र ने अपने शरीर में प्रोविडेंस का कार्य नहीं किया, और वह अपने शरीर में हर जगह मौजूद नहीं था। इस प्रकार, मैं एक तरह के दूसरे क्रम के सिद्धांत में विश्वास को स्वीकार करता हूँ, ठीक है? मेरे पास कुछ बाइबल है, लेकिन यह बाइबल और धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित एक अनुमान है।

क्या त्रित्व सही है? ज़रूर। क्या यह तथ्य कि त्रित्व के कार्य संपूर्ण त्रित्व के कार्य हैं? हाँ, और यह सब सच है, और फिर भी मैं इसे स्वीकार करता हूँ, ठीक है? मुझे लगता है कि ऐसा करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, मैं स्वीकार करता हूँ कि त्रित्व का दूसरा व्यक्ति नासरत के यीशु में पूरी तरह से अवतरित हुआ, कोई केनोसिस नहीं, नासरत, कोई केनोसिस नहीं।

उसके पास सभी दिव्य शक्तियाँ हैं। वह केवल पिता की इच्छा के अनुसार उनका उपयोग करता है। इसलिए, कभी-कभी वह कार्य करता है, व्यक्ति ईश्वर-मनुष्य के रूप में कार्य करता है।

अन्य समय में वह ईश्वर-मनुष्य के रूप में कार्य करता है, और हम निश्चित रूप से बाइबल में प्रत्येक श्लोक के साथ यह सब नहीं सुलझा सकते हैं। इस तरह की बात करना नेस्टोरियन है, लेकिन हम व्यक्ति पर जोर देते हैं। बस इतना ही है, कभी भी अलग मानवता नहीं होती, और न ही स्वर्ग में सूर्य, लेकिन अब पृथ्वी पर सूर्य उन कार्यों को करता है जिनके बारे में हम सुसमाचारों में सीखते हैं।

फिर भी, वह ईश्वर ही रहे और अवतार से बाहर रहे। क्या यह रहस्यमय नहीं है? ओह, यह रहस्यमय है। वास्तव में, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम ईसाई धर्म के दो विशाल ऐतिहासिक रहस्यों को छूता है।

त्रिदेव, जब तक कि आप यह न कहें कि सच्चे अवतार में यह एक तिहाई कम हो गया था, एक व्यक्ति है जिसके दो स्वभाव हैं, अर्थात् त्रिदेववाद और क्राइस्टोलॉजी, जो इस सिद्धांत से प्रभावित हैं। लूथरन ने इसे नहीं माना। सुधारवादियों के विपरीत, जिन्होंने कहा कि सीमित में अनंत के लिए कोई क्षमता नहीं है, उन्होंने इसके विपरीत सिखाया।

और लूथर, जो रहस्यों से प्यार करता था, वह रहस्यों से प्यार करता था। जितना अधिक रहस्यमय, उतना ही बेहतर, और इसलिए उसके धर्मशास्त्र में सभी प्रकार के रहस्य और विरोधाभास और इसी तरह की अन्य बातें हैं। कैल्विन ने बहुत सम्मान के साथ लूथर को सुधार का प्रेरित कहा, लेकिन स्पष्ट रूप से एक अलग स्वर था।

इसलिए, लूथर ने डेउस एब्सकॉन्डिटस और डेउस रेवेलेटस, यानी छिपे हुए ईश्वर और प्रकट ईश्वर के बीच अंतर किया। और आप जानते हैं क्या? जैसा कि उन्होंने समझाया, कैल्विन पूरी तरह से सहमत होंगे, लेकिन वह दो देवताओं के बारे में बात नहीं करने जा रहे हैं। क्या लूथर वास्तव में इस पर विश्वास करते थे? नहीं, वह दो देवताओं में विश्वास नहीं करते थे।

लेकिन छिपा हुआ परमेश्वर आदेशों का परमेश्वर है, अपनी महिमा का परमेश्वर है, पूर्वनियति का परमेश्वर है। और उस चीज़ के बारे में, हम बहुत कुछ नहीं जानते। प्रकट परमेश्वर क्रूस का धर्मशास्त्र है।

यह ईश्वर है जो यीशु के क्रूस पर पीड़ा में हमसे मिलता है। फिर से, कैल्विन ने लूथर की बहुत सी शिक्षाओं को दोहराया, लेकिन वह उस तरह की कुछ शब्दावली का पालन नहीं कर सका। और इसलिए कैल्विन, वास्तव में, लूथर से सहमत था कि विश्वासी एक ही समय में सिमुल जस्टस एट पेकेटर थे, एक ही समय में मसीह में न्यायसंगत, धर्मी और पापी थे।

लेकिन वह इसे इतनी बेरुखी से नहीं कह सकता था। लूथर विरोधाभासों में आनंदित लग रहा था। मेरे सुधार प्रोफेसर ने कहा, यहाँ लूथर के धर्मशास्त्र का एक चित्र, एक दृश्य है।

इस तरह। सिमुल जस्टस एट पेकेटर, एक ही समय में न्यायी, एक ही समय में पापी, इस तरह। या छिपा हुआ ईश्वर, प्रकट ईश्वर, छिपा हुआ ईश्वर।

और यहाँ कैल्विन का धर्मशास्त्र है। कैल्विन एक पुनर्जागरण मानवतावादी और ईसाई थे। यहाँ उनका धर्मशास्त्र है।

उन तरह के विरोधाभासी तरीकों से प्रस्तुत नहीं करता है जहाँ उसे लगता है कि यह आवश्यक नहीं है। मैं सुधार के प्रेरित का पूरी तरह से सम्मान और प्रशंसा करता हूँ, लेकिन एक अलग व्यक्ति, और मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि एक दूसरे की तुलना में अधिक बुद्धिमान है।

मैं तो इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकता। वे दोनों ही प्रतिभाशाली थे। ओह, मेरे शब्द।

लेकिन उनकी शैलियाँ अलग-अलग थीं। लूथर ज्यादातर मध्ययुगीन भिक्षु थे। कैल्विन ज्यादातर पुनर्जागरण मानवतावादी थे।

कैल्विन का प्रलोभन अध्ययन था। वह जिनेवा और उन बुरे लोगों के पास वापस जाने के अलावा कुछ भी करना चाहता था। लेकिन लूथरन उपदेशक था।

कैल्विन भी ऐसा ही था। लेकिन मैं यह कैसे कह सकता हूँ? वे दोनों शैतान में विश्वास करते थे, लेकिन कैल्विन ने उस पर स्याही नहीं फेंकी। और लूथर के प्रति निष्पक्षता में, कैल्विन किसी तरह की मानसिक बीमारी से पीड़ित नहीं था, किसी तरह का महान अवसाद जो लूथर ने अपने पूरे जीवन में झेला।

और यह बात और भी उल्लेखनीय हो जाती है कि कैसे उसने उस चीज़ पर विजय प्राप्त की और जिस तरह से उसने परमेश्वर की सेवा की, वह सब किया। इसलिए, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिक मसीह के देवता का एक परिणाम है। दूसरा व्यक्ति त्रिदेव का पूर्ण रूप से अवतार बन जाता है, पूर्ण रूप से अवतार बन जाता है, और दिव्य पुत्र पूरी तरह से बाहर रहता है।

क्या मैं पूरी तरह से समझ पाया हूँ कि मैंने अभी क्या कहा? नहीं, नहीं। जैसा कि मैंने पहले कहा, यह दोनों रहस्यों में भाग लेता है। लेकिन मुझे लगता है कि एक ही समय में एक अखंड पूर्ण-वृत्ताकार त्रित्ववाद और एक मजबूत एक-व्यक्ति दो प्रकृति सिद्धांतों को संरक्षित करना आवश्यक है।

केनोटिसिज्म, केनोसिस, क्राइस्टोलॉजीज। फिलिप्पियों 2, जब यह कहता है कि मसीह ने खुद को खाली कर दिया, तो ग्रीक शब्द केनो का उपयोग किया गया है, जिसका अर्थ है खुद को खाली कर दिया। इसके लिए संज्ञा केनोसिस है, जिसका अर्थ है खाली करना।

यह काफी विस्तृत और विस्तृत इतिहास है। मैं आपको मुख्य बातें बताऊंगा। मैं डेविड वेल्स, ईसा मसीह के व्यक्तित्व से उद्धरण दे रहा हूँ, जो वास्तव में इस पर चर्चा करते हैं।

केनोटिसिज्म। केनोटिसिज्म की ऐतिहासिक उत्पत्ति मुख्य रूप से सुधार के बाद लूथरनवाद और कैल्विनवाद द्वारा उत्पन्न बहस में निहित है। लूथर और कैल्विन ने सुसमाचार के लिए अपने जीवन की लड़ाई लड़ी।

उनके वंशज, तीस साल के युद्ध के बाद, जिसमें प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों ने एक दूसरे के हज़ारों लोगों को मार डाला। कितना दुखद, कितना हास्यास्पद। लूथरन और रिफॉर्म पादरी और विद्वानों के पास विस्तृत प्रणाली के बारे में सोचने और विकसित करने के लिए अधिक समय था।

लूथरनवाद शब्द मांस क्राइस्टोलॉजी के भीतर चला गया, जबकि सुधारवादियों ने शब्द मनुष्य दृष्टिकोण की अधिक वकालत की। शब्द मांस, त्रिदेवों के दूसरे व्यक्ति ने अपने लिए एक मानव शरीर लिया, और विधर्मी रूप में, कोई मानव आत्मा नहीं, पॉलीनेरियनवाद। एक रूढ़िवादी रूप में, जैसे कि अथानासियस, उसके पास एक मानव शरीर और आत्मा है, लेकिन वह शायद ही उस आत्मा से कार्य करता है।

एपोलिनारियस के अनुसार, लोगोस आत्मा का हिस्सा है। ग्रीक मनोविज्ञान कहता है कि मनुष्य शरीर और आत्मा से बना है। आत्मा पूरे मानव के लिए अग्रणी सिद्धांत, मार्गदर्शक सिद्धांत है।

और अपोलिनारियस में, शब्द, लोगोस ने उस मानव आत्मा की जगह ले ली। यह पूर्ण मानवता नहीं है, और अपोलिनेरियनवाद की 451 में चाल्सेडन में सही ढंग से निंदा की गई है। अथानासियस ने कबूल किया कि मसीह ने अपने आप में पूर्ण मानवता को अपनाया, लेकिन उसका धर्मशास्त्र अभी भी शब्द मनुष्य के बजाय शब्द मांस था क्योंकि यह संदिग्ध है कि यीशु ने अपनी मानव आत्मा से कितना कार्य किया।

लोगो ने व्यक्ति पर प्रभुत्व जमाया। उसके पास एक मानवीय आत्मा है, इसलिए मसीह के देवता के महान रक्षक एथनासियस रूढ़िवाद की सीमा के भीतर हैं, है न? लेकिन यह एक समस्या है। पूर्ण विकसित शब्द मनुष्य क्राइस्टोलॉजी का कहना है कि शाश्वत शब्द ने अपने लिए एक सच्ची मानवता ग्रहण की।

वह एक मानव शरीर और आत्मा है, और कभी-कभी, वह अपनी मानवीय आत्मा से कार्य करता है। लूथरवाद ने मांस स्कीमा शब्द को प्राथमिकता दी। केल्विनवाद, सुधारवादी धर्मशास्त्र ने मनुष्य स्कीमा शब्द को प्राथमिकता दी।

ऐसा लगता है कि मसीह की सर्वव्यापकता या सर्वव्यापकता में मार्टिन लूथर की रुचि उसके संस्कारात्मक संदर्भ तक ही सीमित थी। शुक्र है कि उन्होंने केनोसिस सिद्धांत विकसित नहीं किया, ठीक है? लूथर की चिंता क्या थी? लूथर ने मांस के रोमन कैथोलिक सिद्धांत को दृढ़ता से खारिज कर दिया। ओह, उन्होंने शब्द को बरकरार रखा, और इसलिए लूथर का प्रभु भोज को संदर्भित करने का एक तरीका ड्यूश मेसे, जर्मन मांस था, लेकिन कुछ मायनों में इसकी विषय-वस्तु बहुत अलग थी।

लूथर ने कहा कि प्रभु भोज कोई बलिदान नहीं है। हो सकता है कि यह स्तुति का बलिदान हो, जैसा कि बाद में एंग्लिकन ने कहा, लेकिन परमेश्वर के पुत्र का बलिदान नहीं। अरे मेरे शब्द, नहीं।

यह कुछ ऐसा नहीं है जो हम भगवान को देते हैं। बल्कि यह कुछ ऐसा है जो भगवान हमें देते हैं। यह भगवान की ओर से एक उपहार है, और पुजारी भगवान को बिना खूनी बलिदान के मसीह की पेशकश नहीं करता है।

वह ट्रांसबस्टैंटिएशन से नफरत करता था क्योंकि, उसके लिए, यह चमत्कार को समझाने का एक मानवीय प्रयास था। यह उसके लिए एक चमत्कार था, और मसीह का शरीर लूथर के लिए प्रभु के भोज में उतना ही मौजूद था जितना कि थॉमस एक्विनास सहित किसी भी रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री के लिए था, जिनके काम ने अरस्तू के दर्शन का उपयोग करके लूथर और सभी कैथोलिकों को विरासत में दिया था। याद रखें, लूथर एक कैथोलिक भिक्षु और धर्मशास्त्री, पुजारी और धर्मशास्त्री थे, कि बाहरी रूप से तत्व भौतिक तत्व, रोटी और शराब बने रहे, लेकिन आंतरिक रूप से, अलौकिक रूप से, बाहरी रूप वही रहा, लेकिन आंतरिक सार या पदार्थ बदल गया, इसलिए पदार्थ का ट्रांस परिवर्तन, ट्रांसबस्टैंटियल, ट्रांसबस्टैंटिएशन।

एक आंतरिक अलौकिक चमत्कार जहाँ बाहरी, बाहरी रूप से तत्व अपनी भौतिक विशेषताओं को बनाए रखते हैं, लेकिन आंतरिक रूप से, नहीं, लूथर कहते हैं, हास्यास्पद, ईशानिंदा, लेकिन जैसा कि उन्होंने प्रभु के शब्दों को पढ़ा, जैसा कि उन्होंने तालिका में लिखा, तालिका में लिखा, तालिका को खराब कर दिया, जहाँ वे ज़िंंगली से मिले, और वे सहमत हुए, मुझे नहीं पता कि यह कितने बिंदु थे, 14 में से 13 बिंदु, कुछ ऐसा ही। उन्होंने लिखा, होक एस्ट म्युम कॉर्पम, यह मेरा शरीर है, और ज़िंंगली ने कहा, निश्चित रूप से, वह शरीर में था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि यह उसका भौतिक शरीर था। लूथर था, उसने ज़िंंगली को संगति का दाहिना हाथ नहीं

दिया और उसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया; यह एक ऐसे व्यक्ति का चरित्र है जिसके पास सुधार शुरू करने का साहस है।

वर्म्स में, पूछताछकर्ता ने कहा, भिक्षु मार्टिन, क्या आप अकेले सही हैं, और सभी पिता और चिकित्सक गलत हैं? मुझे इस बारे में सोचने का समय दें। वह वापस आया और कहा, तो भगवान मेरी मदद करें, मैं जितना समझ सकता हूँ, हाँ। बीच में, उसने पुस्तकालय में पढ़ा कि जान हुस और जॉन हुस के धर्मशास्त्र बहुत समान थे, ठीक है, हुस को भी रोम ने सूली पर जला दिया था, जिसने उससे झूठ बोला था, उन्होंने उसे सुरक्षित मार्ग दिया, और फिर उन्होंने उसे मार डाला, उसे जिंदा जला दिया, लेकिन वह एक मजबूत ग्राहक है, और आपको अच्छे के साथ बुरा भी मिलता है।

वास्तव में, लूथर ने बहुत लंबा जीवन जिया। मैं आपको जेम्स किटलसन, ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर द्वारा लिखित मार्टिन लूथर रिफॉर्मर की सराहना करता हूँ। यह कई मायनों में बहुत अच्छा है: यह अत्यधिक तकनीकी होने के बिना अकादमिक है, यह सरल भाषा में है, और यह लूथर के पूरे जीवन को कवर करता है, जिसमें वह एक क्रोधी बूढ़ा आदमी, एक कर्कश बूढ़ा व्यक्ति था, जो अपने पूरे जीवन में यहूदी-विरोधी होने का दोषी था, उदाहरण के लिए, इसलिए उसकी खूबियाँ और कमज़ोरियाँ बहुत हैं।

वैसे भी, वह झुकने को तैयार नहीं था। आश्चर्यजनक रूप से, अपने जीवन के अंत में, आखिरकार, उसने स्वीकार किया कि उसके साथी सुधारक ईसाई थे, और उस समय उसके आस-पास के युवा लोग, जो उसका सम्मान करते थे, जो उसे सही मायने में अपने पिता के रूप में मानते थे, रोए, लेकिन मारबर्ग में नहीं, जहाँ मारबर्ग वार्तालाप ज़िंगली के साथ आयोजित किया गया था, नहीं ज़िंगली, आप ईसाई नहीं हैं। लूथर ने क्या रखा? मसीह उस भोज में उतना ही मौजूद है जितना थॉमस एक्विनास या किसी भी रोमन कैथोलिक ने कभी कहा।

आप इसे कैसे समझाएंगे? आप इसे नहीं समझा सकते। यह एक चमत्कार है। वह तत्वों के बीच, उनके साथ और उनके नीचे था।

ऐसा कैसे हो सकता है? लूथर ने केनोसिस का व्यवसाय शुरू किया, ऐसा नहीं कि उसने यह सिखाया, लेकिन उसने गुणों के संचार की शिक्षा दी। हमने अपने पैट्रिस्टिक सर्वेक्षण में इसका उल्लेख किया है। हम बाद में मसीह के व्यक्तित्व की एकता के तहत इस पर चर्चा करेंगे, लेकिन सुधारवादी और लूथरन इस बात से बहुत असहमत हैं।

लूथर ने खुद सिखाया कि पुनरुत्थान में, परमेश्वर के पुत्र, परमेश्वर के पुत्र ने, अपने मानवीय स्वभाव के साथ अपने दिव्य गुणों को साझा किया ताकि, चमत्कारिक रूप से, मसीह का शरीर सर्वव्यापी हो सके। इस प्रकार मसीह के इस सर्वव्यापी शरीर में एक यूचरिस्टिक प्रेरणा है ताकि मसीह अलौकिक तरीके से भोज में उपस्थित हो सके और उसे तत्वों में, साथ में और तत्वों के तहत इसे समझाने के लिए न कहे।

मुझे लगता है कि वह पुरानी आग और प्रकाश की कल्पना या जो भी हो, का उपयोग करता है, क्योंकि आग प्रकाश के साथ है, और आग जलती है और उस तरह की चीजें। तो, उस अर्थ में, मसीह साथ है, और यह क्या समझाता है? यह वास्तव में स्पष्ट नहीं करता है। यह एक तरह से यह दर्शाता है कि यह एक चमत्कार है।

कोई बलिदान नहीं, कोई पुरोहिती भेंट नहीं, कोई रूपांतरण नहीं। मुझे आश्चर्य है कि मेरे लूथरन भाई-बहन रूपांतरण के बारे में बात करते हैं। मुझे विश्वास नहीं होता कि लूथर कभी भी उस शब्द का समर्थन करेंगे क्योंकि यह फिर से एक रहस्य को नाम देने की कोशिश है, लेकिन फिर भी, उनमें से कुछ ऐसा करते हैं।

मुझे डेविड वेल्स के यह कहने पर खुशी हुई कि उनमें से सभी ऐसा नहीं करते। खैर, शायद पृष्ठभूमि काफी हो गई। मार्टिन लूथर की मसीह की सर्वव्यापकता या सर्वव्यापकता में रुचि उसके संस्कारात्मक संदर्भ तक ही सीमित थी।

लूथर के लिए यह पुष्टि करना महत्वपूर्ण था क्योंकि वह समष्टिकरण में विश्वास करता था, हालाँकि इस शब्द को हमेशा सराहा नहीं जाता था। जब यीशु ने कहा, यह मेरा शरीर है, तो उनका मानना था कि इसे एक हद तक शाब्दिक अर्थ में समझा जाना चाहिए, जिसे न तो कैल्विन और न ही ज़िंगली अनुमति देते। हालाँकि, अगली पीढ़ी में, सर्वव्यापकता भी ईसाई धर्म के महत्व का विषय बन गई।

इसलिए, लूथर ने केनोसिस की शिक्षा नहीं दी, लेकिन उनके लूथरन, उनके वंशजों ने धर्मशास्त्रीय रूप से ऐसा किया। ये महान विद्वान और विचारक थे, आस्था के दिग्गज, अगर आप चाहें तो। उन्होंने प्रकृति के संचार का उपयोग किया जिसके द्वारा मसीह में मानव ने देवत्व की विशेषताओं को ग्रहण किया, इस प्रकार मानव जाति के साथ निरंतरता को तोड़ दिया, डेविड वेल्स एक पक्षपाती सुधार धर्मशास्त्री के रूप में लिखते हैं।

लूथरन के प्रति निष्पक्ष होने के लिए, और मैं यह सब वास्तव में अच्छी तरह से समझ भी नहीं पाया, लेकिन वे इस पर दो खेमों में विभाजित हो गए। कुछ ने जॉन ब्रेंटज़ का अनुसरण किया, अन्य ने मार्टिन केमनिट्ज़ का। ब्रेंटज़ियन और केमनिट्ज़ियन।

ब्रेंटज़ ने सिखाया कि मसीह के दो स्वभाव न केवल एक आम व्यक्ति में जुड़े हुए थे बल्कि एक आम व्यक्ति में गढ़े गए थे। यह मामला होने के नाते, जिसे बाद में सापेक्ष गुण कहा जाने लगा, वह उसकी मानवता तक भी विस्तारित हुआ। उदाहरण के लिए, ब्रेंटज़ ने तर्क दिया कि मसीह की मानवता की सर्वव्यापकता के विभिन्न रूप थे।

इस प्रकार, मसीह में, उनके आत्म-शून्य होने और उनके उत्कर्ष को अलग करने के लिए बहुत कम, यदि कुछ भी था। बल्कि, उनके अस्तित्व के दो तरीके शुरू से ही, अवतार से ही मेल खाते थे। मार्टिन केमनिट्ज़ का काम कहीं ज्यादा उदार और सतर्क था।

फिर भी, उन्होंने जोर देकर कहा कि मसीह की मानवता स्थायी है और हमेशा स्थानीय रहेगी। यह एक अच्छा कदम है। केमनिट्ज़ के अनुसार, गुणों के हस्तांतरण का अर्थ दैवीय से मानव में

गुणों का स्थायी हस्तांतरण नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है दैवीय द्वारा मानव का ऐसे तरीकों से उपयोग करना जो सामान्य मानवीय सीमाओं से बाहर हों।

इस प्रकार, चेमनिट्ज़ में गुणों का आदान-प्रदान रुक-रुक कर होता हुआ प्रतीत होता है, जबकि ब्रेंटज़ में यह निरंतर था और अवतार के व्यक्तिगत मिलन का एक आवश्यक परिणाम था। सामंजस्य का सूत्र, एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतीक, सैद्धांतिक प्रतीक, इस और कई अन्य मामलों पर विचारधाराओं के स्कूलों को समेटने का प्रयास करता है, जिस पर लूथरन धर्मशास्त्रियों ने सैद्धांतिक कंपनी को अलग कर दिया था। यह समझौता का एक दस्तावेज था, जो दोनों को गले लगाने की कोशिश कर रहा था।

मैं इसके बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दूंगा, बल्कि यह कहूंगा कि 19वीं शताब्दी के मध्य तिमाहियों में जर्मनी में विहित रूपरेखा का विकास हुआ। और फिर, जब यह जर्मनी में खत्म होने लगा, तो क्या हुआ? 19वीं शताब्दी के अंत में ग्रेट ब्रिटेन में इसे पुनर्जीवित किया गया। सामान्य तौर पर, विहितवादियों ने कहा, उद्धरण, कि ईश्वरीय लोगो ने, हमारे स्वभाव को अपने ऊपर लेने और वास्तविकता में अपनी सांसारिक स्थितियों और सीमाओं के अधीन होने के लिए, कुछ हद तक त्याग दिया, कम से कम, जो वह अवतार लेने से पहले था।

लोगो ने खुद को मानवीय आयामों में घटा लिया और अवतार के उद्देश्य से खुद को मानव प्रकृति के अनुकूल बना लिया। सबसे आम तौर पर, यह तर्क दिया गया कि इस निष्प्राण प्रक्रिया के कारण सापेक्ष गुण, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता, सर्वव्यापकता का नुकसान हुआ। इस पर मतभेद थे।

कुछ लोगों ने कहा कि देवत्व से उसके सापेक्ष गुण हमेशा के लिए छीन लिए गए। दूसरों ने कहा कि अस्थायी रूप से। मैं आपको और भी चरम उदाहरण दे सकता हूँ, लेकिन मैं नहीं दूँगा।

मुझे गॉटफ्रीड थॉमसियस का उल्लेख करना चाहिए, जिन्होंने वास्तविक मानवता को इस विचार के साथ सामंजस्य स्थापित करने के तरीके के रूप में एक उदार केनोसिस की पेशकश की कि ईश्वर वास्तव में अवतार था। ग्रेट ब्रिटेन में, चार्ल्स गोर एचआर मैकिंटोश, एएम फेयरबर्न और पीटी फोर्सिथ के साथ एक महत्वपूर्ण नाम था। इसलिए, अवतार में, शाश्वत दिव्य शब्द की विशेषताएं वास्तविक होने की स्थिति से संभावित होने की स्थिति में सिकुड़ गईं।

यह फ़ोर्सिथ का संस्करण है। फ़ोर्सिथ ने जोर देकर कहा कि इस आत्म-विमुखीकरण को क्रूस और पुनरुत्थान में ईश्वरत्व की पूर्ण क्षमता में मसीह के उद्भव की समझ से पूरित किया जाना चाहिए। मानव और दिव्य एक व्यक्ति में नहीं मिलते।

उन्होंने उस शब्दावली को अस्वीकार कर दिया। वे कार्रवाई को बचाने में मिले। केनोसिस सिद्धांतों में कई उल्लेखनीय और प्रशंसनीय विशेषताएं हैं।

डेविड वेल्स एक निष्पक्ष व्यक्ति हैं। सबसे पहले, वे सभी एक दिव्य पूर्व-अस्तित्व वाले शब्द से शुरू हुए। दूसरा, विहित सिद्धांत ने ऐतिहासिक यीशु को पूर्ण वास्तविकता का श्रेय देने की कोशिश की।

तीसरा, केनोनिक सिद्धांत ईश्वरीय प्रेम को महत्वपूर्ण नैतिक सामग्री प्रदान करते हैं। हालाँकि, इस सिद्धांत के कुछ परेशान करने वाले आयाम थे, जिन पर हम अपने अगले व्याख्यान में चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 15 है, सिस्टेमेटिक्स, मसीह का देवता, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य ग्रंथ, उपासना, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम